

11. गुरुदेव रवीन्द्र नाथ ठाकुर

- डॉ० पीयूष गुलेरी



आधुनिक भारत की महान विभूतियों में गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर का नाम बड़े आदर और सम्मान से लिया जाता है। अपनी मौलिक प्रतिभा और अद्भुत रचना-कौशल के कारण वे जन-जन में पूज्य एवं श्रद्धेय हो गए। रवीन्द्रनाथ ठाकुर का जन्म यद्यपि बंगाल में हुआ था तदपि वे भारत ही नहीं अपितु विश्व की विभूति थे। उनका जन्म 6 मई सन् 1861 को कोलकाता के जोड़ा सांकू मुहल्ले में हुआ था। उनके पिता का नाम महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर और माता का श्रीमती शारदा देवी था। वे अपने पिता की सबसे छोटी किन्तु भाग्यशाली संतान थे।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर का जन्म ऐसे परिवार में हुआ था जिस पर लक्ष्मी और सरस्वती दोनों की समान कृपा थी। इस सुसंस्कृत परिवार में कला और संगीत का बड़ा आदर था। कला और संस्कृति की दृष्टि से समृद्ध परिवारिक वातावरण में उनकी प्रतिभा का सहज रूप से विकास हुआ। बाल्यकाल में उनकी माता जी स्वर्ग सिधार गईं, इसलिए वे मातृसुख से वंचित रहे।

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर की शिक्षा-दीक्षा के लिए घर पर ही शिक्षक नियुक्त किए गए, किंतु वे तो प्रकृति के पुजारी थे। उन्हें वास्तविक शिक्षा मानव-जीवन और प्रकृति के विद्यालय में ही मिली। उन्हें बचपन में अपने पिता के संग हिमालय भ्रमण का सुअवसर मिला। भ्रमणकाल में उन्होंने अपने पिता से अंग्रेजी, संस्कृत और ज्योतिष सीखा। उनके घर वैसे भी अंग्रेजी विद्वान प्रायः आया-जाया करते थे। निरंतर साहित्यिक चर्चा के बीच रवि बाबू में कवित्व शक्ति बहुत छोटी आयु में ही प्रस्फुटित होने लगी थी। अपने प्रारंभिक रचनाकाल में उन्होंने अपना नाम भानुसिंह रखा था।

सन् 1874 में 'तत्त्वबोधिनी' नामक पत्रिका में उनकी सर्वप्रथम 'अभिलाषा' नामक लम्बी कविता प्रकाशित हुई थी। इस समय उनकी आयु केवल तेरह वर्ष की थी। फिर 'भारती' नामक पत्रिका में उनकी कविताएं और 'करुणा' नामक उपन्यास धारावाहिक रूप में प्रकाशित हुए।

सन् 1878 में विद्याध्ययन के लिए वे इंग्लैंड गए। वहाँ वे ब्राइटन के पब्लिक स्कूल में और बाद में लंदन यूनिवर्सिटी कॉलेज में भरती हुए। वहाँ उन्हें अच्छे-अच्छे लोगों के सम्पर्क में आने का मौका मिला। इसी समय उन्होंने 'भग्नतरी' और 'भग्नयहृदय' नामक कृतियां रचीं। तत्पश्चात् 'वाल्मीकि प्रतिभा' और 'काल मृगया' नामक नाटकों की रचना और सफल मंचीकरण भी किया। सन् 1881 में उनके पिता ने उन्हें बैरिस्टरी पास करने के लिए पुनः विलायत भेजा, किन्तु वे मद्रास से ही लौटकर अपने भाई के पास रहने लगे। उन्हें तो मौलिक रचनाएं रचनी थी। वहाँ उन्होंने संध्या संगीत और 'प्रभात संगीत' नामक प्रसिद्ध रचनाओं का प्रणयन किया। 22 वर्ष की आयु में इनका

विवाह भवतारिणी नामक कन्या से हो गया। ठाकुर-परिवार में आने पर उसका साहित्यिक नाम 'मृणालिनी' रखा गया। इसके बाद 'छवि गान', 'राजर्षि', 'चित्रांगदा', 'मानसी' और 'रागरानी' नामक पुस्तकें प्रकाशित हुईं। इनकी रचनाओं में बंगाल का जनजीवन, भारतीय ग्रामीण परिवेश, सत्य घटनाओं और प्रकृति नटी के वास्तविक चित्रों के दर्शन होते हैं।

सन् 1901 में उन्होंने बोलपुर के शांतिनिकेतन में एक आश्रम स्थापित किया जो अब 'विश्वभारती' के नाम से प्रसिद्ध है। 1902 में इनकी पत्नी का देहांत हो गया और बाद में मंझली पुत्री भी चल बसी। इनके 'शिशु' नामक काव्य में वात्सल्य का सुन्दर परिपाक हुआ है। गुरुदेव के चिन्तन में विराटता आ गई थी। इसीलिए इनकी कृतियों में संकुचित विचारों की अपेक्षा विश्व-प्रेम की रागिनी गूंजने लगी। इनकी कविताओं, लेखों और भाषणों में अध्यात्म की पुट मिलती है।

गुरुदेव की विश्वविख्यात रचना 'गीतांजलि' सन् 1909 में प्रकाशित हुई जिसने सारे संसार में इनकी कीर्ति फैला दी। अब वे 'विश्व कवि' के पद पर आसीन हो गए। 'गीतांजलि' के अंग्रेजी संस्करण का तो अपूर्व स्वागत हुआ। यूरोप और अमेरिका तक चारों ओर उनकी रचनाओं की धूम मच गई। सन् 1913 में उन्हें विश्व विख्यात 'नोबल पुरस्कार' से अलंकृत किया गया। नोबल पुरस्कार की प्राप्ति पर कलकत्ता विश्वविद्यालय ने उन्हें 'डॉक्टर' की उपाधि से गौरवान्वित किया। सन् 1915 में ब्रिटिश सरकार ने आपको 'सर' की उपाधि से विभूषित किया, किन्तु सन् 1919 में जलियांवाला बाग के लोमहर्षक कांड से क्षुब्ध होकर आपने वह उपाधि त्याग दी।

गुरुदेव विदेशी राज्य के विरुद्ध थे, किन्तु उससे बढ़कर भारतीयों की दास वृत्ति की निन्दा करते थे। राष्ट्रीय प्रतिभा के अनुकूल आदर्शों को पुनर्जीवित करने हेतु उनके प्रयास बड़े ही महत्त्वपूर्ण हैं। रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने जितना लिखा उतना लिखने वाले बहुत कम हैं। वे केवल कवि, नाटककार, कहानीकार, उपन्यासकार और लेखक ही नहीं, वरन् गायक, अभिनेता, चित्रकार और दार्शनिक तथा पत्रकार भी थे।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर शांति निकेतन को एक ऐसे विश्वविद्यालय में परिणत करना चाहते थे जो देश विदेश में ज्ञान-विज्ञान का प्रसार करने में समर्थ हो। सन् 1920 में वे इंग्लैंड तथा यूरोप के अन्य देशों में गए। वहां से लौट कर उन्होंने दिसंबर, 1921 में 'विश्वभारती' की स्थापना करके अपने स्वप्न को साकार किया।

महाकवि अस्सी वर्ष की आयु में 7 अगस्त, 1941 को स्वर्गारोहण कर गए।

अभ्यास

1. रवीन्द्रनाथ ठाकुर का जन्म कब हुआ ?
2. रवीन्द्रनाथ ठाकुर विश्व की विभूति क्यों माने जाते हैं ?
3. रवीन्द्रनाथ ठाकुर की चार प्रमुख कृतियों के नाम बताइये।
4. गीतांजलि क्यों प्रसिद्ध है ?
5. रवीन्द्रनाथ ठाकुर की उपलब्धियों पर टिप्पणी लिखें।